IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिलाओं का सशक्त एवं आत्मनिर्भरता में ग्रामीण महिला विकास योजना का महत्व (एक अध्ययन)

राजकंवर शेखावत
शोधार्थी, पी.एच.डी. (लोक प्रशासन, विभाग)
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान, भारत

शोध निर्देशक
डॉ. लालकृष्ण शर्मा

अमूर्त (Abstract) – 'तुम एक स्त्री हो तो तुम ज्यादा आजाद और स्वावलम्बी जीवन जी सकती हो, अगर तुम्हारे पास अपना पैसा है। तुम जीवन के बाकी दुखों से मुक्ति तो नहीं पा सकती, लेकिन उसे ज्यादा आत्मसम्मान और आत्मविश्वास से लड़ सकती हो अगर तुम आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो।

ग्रामीण महिलाएं कमाने वाली, उद्यमी और बचतकर्ता के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार, ग्रामीण महिलाओं में निवेष कई गुना लाभ लेकर आता है, स्थानीय अर्थव्यवस्था को समर्थन देने और विकसित करने में उनकी भूमिका उनमें निवेश के उनके पुरे समुदाय में निवेष बनाती है।

इसलिए आज समय की मांग है कि महिलाएं सशक्त बने, रचनात्मक सोच के साथ अपने कदम बढ़ाये, आत्मविष्वास को मजबूत करे समाजोत्थान में अपनी भूमिका को और असरकारक बनाए।

यह शोध पत्र भारत में ग्रामीण महिलाओं की वर्तमान आर्थिक स्थिति के मूल्यांकन के साथ उनके आर्थिक सशक्तिकरण के प्रभावी तरीकों का पता लगाने का एक प्रयास है भारत में ग्रामीण महिलाओं के लिए ऋण और भूमि की उचित पहुंच असंभव है आय में लैंगिक असमानता और अपर्याप्त तकनीकी योग्यता ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में प्रमुख बाधा है। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा सुझाए गए घटकों का गहन मूल्यांकन इस शोध पत्र में किया गया है, यह पत्र ग्रामीण भारत ने महिलाओं को सशक्त बनाने की दिषा में इस एकीकृत दृष्टिकोण के कार्यान्वयन को सिफारिष करता है।

मुख्य शब्द – महिला आर्थिक सशक्तीकरण, ग्रामीण भारत, महिला कल्याण योजनायें, कौशल विकास।

परिचय – किसी देश की सामान्य और क्षेत्रीय योजना में महिलाओं और विकास के मुद्दों का पूर्ण एकीकरण, निस्संदेह सांमजस्यपूर्ण और सतत् विकास को बढ़ावा देता है इसके विपरित महिलाओं की अनदेखी करना और उन्हें अदृश्य बना देना असंतुलन पैदा कर सकता है और परिवर्तन की प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। ग्रामीण महिलाओं के लिए विकास नीति बनाना जिसे नियोजन तंत्र मे शामिल किया जाता है, सक्रिय भागीदारी की एक प्रक्रिया है, जिससे महिलाओं को अपने स्वयं के अधिकार मे उत्पादक के रूप मे अपनी स्थिती की पहचान और सराहना प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं के समाधान की खोज और कार्यान्वयन होता है ऐसी नीति विकास मे सभी भागीदारी द्वारा अनुमोदित उद्देश्यो के आधार पर कार्य योजनाएं तैयार करने और कृषि और ग्रामीण क्षेत्र के लिए विकास कार्यक्रमों और परियोजनाओं में एकीकृत करने के लिए एक सामान्य रूपरेखा का गठन करती है।

ग्रामीण महिला विकास योजना ग्रामीण महिलाओं के सशक्त बनाने और उनकी आजीविका मे सुधार करने के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक योजना है। ग्रामीण महिलाएं अपने घरों और समुदायों

में खाद्य और पोषण सुरक्षा हासिल करने मे अहम भूमिका निभाती है वे स्थानीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती है। ग्रामीण विकास न केवल ग्रामीण क्षेत्रों मे रहने वाली अधिकांश आबादी के लिए महत्वपूर्ण है।

बल्कि राष्ट्र की समग्र आर्थिक वृद्धि के लिए भी महत्वपूर्ण है।

भारतीय संविधान पुरूषों व महिलाओं के बीच अधिकारों की मान्यता देता है, परन्तु निर्विवाद रूप से स्त्रियों को भूमिका व क्रिया में भेद स्वीकार करता है। संविधान में समानता की व्यवस्था महिलाओं की स्थिति संवैधानिक दृष्टि से तो सुदृढ़ हो गई किन्तु वास्तविक रूप में आज की महिलाएं शोषण की उत्पीडन की स्थिति बनी हुई है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति दयनीय है, जनगणना के आंकड़ों से संकेत मिलता है कि पुरूषों की 78.57 प्रतिशत की तुलना में ग्रामीण भारतीय महिलाओं की साक्षरता दर केवल 58.75 प्रतिशत है। केवल 26 महिलाओं की औपचारिक ऋण तक पहुंच है और लिंगानुपात भी निदंनीय है।

सभी क्षेत्रों में आर्थिक जीवन में पूरी तरह से भाग लेने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना, लचीली अर्थव्यवस्थाओं को आकार देने के लिए आवश्यक है क्योंकि यह स्थिरता को बेहतर बनाता है, और जीवन की गुणवता में सुधार करता है।

पूरी दुनिया में आज महिलाओं को मुख्यधारा से जोड़ने और उनके उत्थान और अधिकारों की बात करते हुए विश्व महिला दिवस मनाया जाता है भारत की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक में अलग पहचान दिलाने में भारतीय महिलाओं का उतना ही योगदान है जितना पुरूषों का। ऐसे में देश की महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सरकार ने भी कई प्रभावी कदम उठाए हैं, जिसकी वजह से देष के कोने–कोने की महिलाएं आज सशक्त हो रही है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को सशक्त बनाने का एक प्रभावी तरीका है। आर्थिक और सामाजिक आत्मनिर्भरता एक दूसरे के पूरक है। महिलाओं के विकास में ही देश का विकास निहित है।

ग्रामीण महिला आर्थिक सशक्तिकरण – ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण का मतलब है, उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाना ताकि वे अपनी जीवन से जुड़े फैसले खुद ले सकें, इसके लिए महिलाओं को षिक्षा और कौषल हासिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के निम्न प्रयास किये –

- महिलाओं को पंचायती राज व्यवस्था में शामिल करना।
- महिलाओं को लोन, कौशल प्रशिक्षण और सब्सिडी देना।
- महिलाओं को पर्यावरणीय क्षेत्रों में शामिल करना।
- महिलाओं को समाज के विकास में समान भागीदार के रूप में शामिल करना।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. ग्रामीण भारत में महिलाओं की समकालीन आर्थिक स्थिति का आंकलन करना।
2. प्रमुख आर्थिक मुद्दों का पता लगाना जिनका महिलाओं द्वारा सामना किया जा रहा है।
3. ग्रामीण भारत में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए कुछ विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों की पहल।

साहित्य की समीक्षा –

1. श्री संजीव (2014) :– ने अपने शोध पत्र मे लिखा है कि महिलाओं के स्वावलम्बन के लिए स्थानीय प्रतिभाओं, उद्यमियों, संस्थानों और नेटवर्क की क्षमता निर्माण में निवेश करने की सख्त जरूरत है ताकि वे आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण की भाषा बोलने मे सक्षम हो सके
2. प्रणव आर चौधरी, मनोज कुमार बेहरा (2016) ने महिलाओं की भूमि के लिए एसेस से संबंधित एक कानूनी सरकारी ढांचे का प्रस्ताव दिया।
3. आर विष्णुवर्तिनी और ए.एम. द्वारा शोध अध्ययन में कुछ कानूनी संशोधनों का सुझाव दिया।

4. अयोति (2016) ने भी उपरोक्त शोधकर्ताओं के निष्कर्षो का समर्थन किया, उनके अध्ययन ने प्रस्तुत किया कि केवल एक कानूनी आधार ही भारत में ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण कर सकता है।
5. अब्दुल अहमद (2015) ने अकुशल ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उनके योगदान के बारे में बताया। उन्होंने भारत में अकुशल ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति के लिए सूक्ष्म स्तर के आंकलन का सुझाव दिया।
6. रूपा, अनीर्डिनर, मंगला एस.एम. (2017) ने ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण का समर्थन किया क्योंकि यह घर और समुदाय में महिलाओं की समान भागीदारी को प्रोत्साहित करेगा।
7. देवी रामा टी. (2017) :– ने शोध किया और सिफारिषें दी क्योंकि महिलाएं भारत की आबादी का आधा हिस्सा है उनकी भागीदारी और सशक्तिकरण के बिना, सतत् विकास के लिए तेजी से आर्थिक प्रगति संभव नहीं है अतः महिला सशक्तिकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है।
8. वेग दानिश मिर्जा (2018) :– ने अपने शोध पत्र में लिखा है कि यह ऐसा समय है जब भारतीय ग्रामीण समाज को परिवर्तन की आवश्यकता है सरकार को तकनीकी सहायता के साथ स्मार्ट योजनाएं तैयार करनी चाहिए।

भारत मे हमे अन्य देशों की तरह विकास के लिए स्मार्ट तकनीकों की आवश्यकता है।

ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में भूमिका – 'सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (ब्डप्) की एक रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण महिलाओं की श्रम भागीदारी दर मार्च 2022 में मात्र 9.92ः थी, जबकि पुरूषों के लिए यह 67.24ः थी।

कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ाने, खाद्य सुरक्षा में सुधार और ग्रामीण गरीबी उन्मूलन में स्वदेशी महिलाओं सहित ग्रामीण महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका और योगदान अमूतपूर्व है। ग्रामीण महिलाएं देष भर में कृषि श्रम शक्ति की रीढ़ है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था भारत की राष्ट्रीय आय में एक महत्वपूर्ण योगदान करती है। इसलिए ग्रामीण महिलाओं की समस्याओं पर ध्यान देने और तत्काल कार्यवाई करने की आवश्यकता है।

ग्रामीण महिलाओं के समक्ष विद्यमान चुनौतियां – ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मशीनीकरण, डेटा की अपूर्ण प्रस्तुति, वेतन समता का अभाव, शिक्षा की कमी, पौष्टिक आहार की कमी, वितीय बाधाएँ आदि।

ग्रामीण महिला विकास योजना के घटक :–

(प) स्वयं सहायता समूह ैभ्ळ)
(पप) ग्रामीण संगठन (ळतंउ वतहंदप्रंजपवद)
(पपप) कौशल विकास कार्यक्रम
(पअ) वित्तीय समावेशन
(अ) बाजार तक पहुंच

एक ग्रामीण महिलाओं को इस योजना द्वारा स्वयं सहायता समूहों गठित किया जाता है जिससे उन्हें बचत, ऋण अन्य वित्तीय सेवाओं में पहुँच प्रदान की जा सके। ग्राम संगठनों मे ैभ्ळ के समूहो को संगठित किया जाता है जो उन्हें स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने और विकास गतिविधियों में भाग लेने मे सक्षम बनाते हैं। तथा ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न व्यवसायो में कौशल प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। तथा महिलाओं को बैंक खाता खोलने और ऋण प्राप्त करने मे मदद की जाती हैं और महिलाओं को अपने उत्पादों को बेचने के लिए बाजार तक पहुंच प्रदान की जाती है जिससे ग्रामीण महिलाएं अपनी आय बढ़ा सकती है ओर अपने परिवारों की आर्थिक स्थिती में सुधार कर सकती है।

ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के लिए विभिन्न पहल :– ग्रामीण महिलाओं के विकास के लिए नीतियां और कार्यक्रम बनाए जाते हैं ताकि ये महिलाएं अपने समुदायों में और देश के विकास मे योगदान दे सकें इन नीतियों के जरिए महिलाओं को सशक्त बनाया जाता है और उन्हें विकास कार्यक्रमों में शामिल किया जाता है।

महिलाओं को कृषि और ग्रामीण उद्यमों में शामिल किया जाता है, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए महिला शक्ति केंद्र (एमएसके) जैसी योजनाएं चलाई जाती है।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 के तहत महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है, तथा महिला स्वयं सहायता समूहों को बैंकों से ऋण लेने में मदद की जाती हैं।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरएसईटीआई) योजना के जरिए महिलाओं को कौषल मे मदद की जाती हैं।

इनके साथ–साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक सशक्तिकरण और कानूनी अधिकारों को बढ़ावा देना शामिल है।

आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए

;प) **दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन** :– माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों (भ्ळै) के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है।

(पप) **स्वच्छ भारत मिशन** :– ग्रामीण क्षेत्रों मे स्वच्छता को बढा देता है, जिससे महिलाओं के लिए बेहतर स्वास्थ्य जीवन स्तर सुनिश्चित होता है।

(पपप) **उज्ज्वला योजना** :– ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छ रसोई गैस कनेक्शन प्रदान करता है।

(पअ) **जल जीवन मिशन** :– ग्रामीण क्षेत्रों मे हर घर मे नल से जल की आपूर्ति सुनिश्चित करता है।

(अ) **मनरेगा** :– ग्रामीण क्षेत्रों मे रोजगार प्रदान करता है, जिससे महिलाओं के आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है।

(अप) **कृषि विपणन अवसंरचना घटक** :– कृषि मशीनरी, औजार और उपकरण खरीदने के लिए महिलाओं को सब्सिडी प्रदान करता है।

(अपप) **प्रधानमंत्री श्रम योगी मान –धन (पीएम–एसवाईएम)** :– असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए बुढापे में सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

निष्कर्ष – वास्तव में, सशक्तिकरण की प्रक्रिया में महिलाओं को बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इन पर काबू पाने के लिए समाज को लैंगिक भेद भावपूर्ण मानदड़ों और प्रथाओं को सक्रिय रूप से कम करने की आवष्यकता है। ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए ग्रमीण महिला विकास योजना का भी महत्व है। यह महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए सरकार से संम्पर्क करने में मदद करती है। साथ की यह महिलाओं को प्रशिक्षण देकर और उनकी क्षमता बढ़ाकर उन्हें सशक्त बनाती है। जिससे समुदाय में महिलाएं आत्मविश्वास महसूस कर रही है और मुख्य धारा की सामाजिक प्रक्रियाओं के अनुरूप है अंत में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा कार्यान्वित एकीकृत दृष्टिकोण का अर्थव्यवस्था के विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता है एक मुख्य सुझाव दिया गया है कि अवैतनिक कार्य को संतुलित करने के लिए एक संभावित रणनीति काफी आवश्यक है।

संदर्भ ग्रथ सूची

- बेग दानिश मिर्जा (2018) स्मार्ट एंड सस्टेनेबल रूरल डेवलपमेंट, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसेंट साइंटिफिक रिसर्च, वॉल्यूम 9, अंक, 1 (एच), पृ. 23427 – 23429, जनवरी 2018
- देवी राम टी. (2017) लैंगिक समानताः महिला सशक्तिकरण, ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस, वॉल्यूम–6, अंक–9, विशेष अंक सितंबर–2017, आईएसएसएन नंबर 2277–8160
- गोपालन, एस (1992) ग्रामीण विकास में महिला कार्य क्षेत्रों के लिए प्रषिक्षण कार्यक्रमों की निगरानी और मूल्यांकन।
- राव संजीव (2014)द जर्नल ऑफ द लास्ट माइलरू गेट वे टू रूरल एम्पावरमेंट इन इंडिया, द जर्नल ऑफ फील्ड एक्शन साइंस रिपोर्ट्स, विशेष अंक 12, 2014
- टी टंडन (2016) महिला सशक्तिकरण परिप्रेक्ष्य और विचार, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी 3(3)
- विष्णुवर्तिनी, आर और अयोथी ए एम (2016) महिला सशक्तीकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिकाओं एक महत्वपूर्ण समीक्षा। अर्थशास्त्र और वित के आईओएसआर जर्नल 7(3)–33–391